बिस्मिल्लाह-हिर-रहमानिर-रहीम

अल्लाह की मदद के लिए शुक्रगुज़ारी

ज़बूर 138

या अल्लाह रब्बुल करीम, मैं पूरे दिल से तेरा शुक्रिया अदा करता हूँ;
मैं इन झूटे ख़ुदाओं के सामने तेरी अज़मत के क़सीदे पढ़ूँगा।[1]

मैं तेरे पाक मुक़ामों की तरफ़ ताज़ीम में झुकता हूँ।
तूने अपना नाम अज़ीम करा है,
और अपने कलाम को हर चीज़ से ज़्यादा इज़्ज़त बख़्शी है।[2]

जिस वक़्त भी मैंने तुझे पुकारा, तूने जवाब दिया।
तूने मुझे हिम्मत दी और मेरी रूह को मज़बूत कर दिया।[3]

ए मेरे रब, ज़मीन के सारे बादशाह तेरा शुक्रिया अदा करेंगे,
जब उनको पता चलेगा कि तूने जो कहा था वो पूरा हो गया है।[4]

हाँ! वो सब तेरे कमाल को देख कर नग़में गाएंगे।
क्यूँकि, ए मेरे रब, तू अज़ीम है।[5]

ए अल्लाह! तू सबसे ज़्यादा अज़ीम है।
तू नर्म दिल वाले लोगों का ख़्याल रखता है,
और मग़रूर लोगों से बहुत दूर रहता है।[6]

जब मैं परेशानियों से घिरा होऊँगा,
तो, ए मेरे रब, तू मेरी मदद करेगा।
जब मेरे दुश्मन मुझसे नफ़रत करेंगे,
तो तू ही मुझे बढ़ कर अपनी ताक़त से बचा लेगा।[7]

ए मेरे रब! तू हर उस नेमत को मेरे पास लाएगा जो तूने मेरे लिए तय करी है।
और, ए मेरे परवरदिगार, तेरी ये मोहब्बत हमेशा क़ायम रहेगी।
अपनी बनाई हुई मख़्लूक़ से अपनी नज़र-ए-करम मत हटा।[8]